आयोजन-समिति

संरक्षक

प्रो. नीलिमा गुप्ता
माननीया कुलपति
डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

निदेशक

प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी
अध्यक्ष - संस्कृत विभाग
9425656284

संयोजक

डॉ. संजय कुमार
8989713997

सह-संयोजक

डॉ. शशिकुमार सिंह
8989889371

डॉ. नौनिहाल गौतम
9826151335

आयोजन सचिव

डॉ. रामहेत गौतम
8827745548

डॉ. किरण आर्या
9479983604

परामर्श मण्डल

प्रो. अम्बिका दत्त शर्मा
प्रो. हरेल थामस
प्रो. चन्दा बैन
प्रो. दिवाकर शुक्ल
प्रो. नागेश दूबे
प्रो. अजीत जायसवाल
प्रो. दिवाकर सिंह राजपूत
प्रो. भवतोष इन्द्र गुरू
प्रो. बृजेश कुमार श्रीवास्तव
प्रो. श्वेता यादव
प्रो. राजेन्द्र यादव
प्रो. विनोद भारद्वाज

कार्यकारिणी सदस्य

डॉ. अनिल कुमार तिवारी, डॉ. आर. वैंकटमुनि रेड्डी, डॉ. संजय नैनवार, डॉ. आशुतोष मिश्र, डॉ. हिमांशु कुमार, डॉ. अरविन्द कुमार, डॉ. अफरोज बेगम, डॉ. अरविन्द कुमार गौतम, डॉ. अभिज्ञान द्विवेदी, डॉ. बबलू रे, डॉ. वसीम अनवर, डॉ. वंदना राजौरिया, डॉ. विवेक जायसवाल, डॉ. वीरेन्द्र मटसेनिया, डॉ. धर्मेन्द्र कुमार सर्राफ, डॉ. अभिषेक कुमार प्रजापति, डॉ. पंकज सिंह, डॉ. संजय बारोलिया, डॉ. सुरेन्द्र कुमार यादव, डॉ. आफरीन खान, डॉ. नीरज उपाध्याय, डॉ. अरुण कुमार साव, डॉ. आयुष गुप्ता, सुश्री शिवानी खरे और डॉ. नवीन सिंह

बुक-पोस्ट

विलसति वेदे विज्ञानम्

त्रिदिवसीय अखिलभारतीय वैदिकसङ्गोष्ठी

वैदिक वाङ्मय में विज्ञान

12-14 नवम्बर, 2024

प्रति,

_____

_____

_____

प्रेषक

प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी
निदेशक
अखिलभारतीय वैदिकसंगोष्ठी
वैदिक वाङ्मय में विज्ञान
अध्यक्ष, संस्कृत-विभाग
डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
9425656284, sanskritsagar1946@gmail.com

NAAC A+ Accredited University

विलसति वेदे विज्ञानम्

त्रिदिवसीय अखिलभारतीय वैदिकसङ्गोष्ठी

वैदिक वाङ्मय में विज्ञान

12-14 नवम्बर, 2024

प्रायोजक

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन (म.प्र.)

आयोजक

संस्कृत विभाग

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)

9425656284 | sanskritsagar1946@gmail.com

हमारा विश्वविद्यालय

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (पूर्व नाम : सागर विश्वविद्यालय) की स्थापना 18 जुलाई 1946 को भारत के महान् शिक्षाविद् और प्रख्यात विधिवेत्ता डॉक्टर हरीसिंह गौर के द्वारा की गई है। कुल 1300 एकड़ के वृहद् भू-भाग में फैला हुआ यह विश्वविद्यालय 15 जनवरी 2009 को संसद के अधिनियम द्वारा केन्द्रीय विश्वविद्यालय के रूप में घोषित हुआ। वर्तमान में 11 संकायों और 38 विभागों से युक्त इस विश्वविद्यालय में एजुकेशन मल्टीमीडिया रिसर्च सेंटर, पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्र और यू.जी.सी. मालवीय मिशन शिक्षक प्रशिक्षण केन्द्र भी हैं। इसके अतिरिक्त एक समृद्ध पुस्तकालय, स्टेडियम, ऑडिटोरियम, छात्र-छात्राओं के लिए अलग-अलग छात्रावास, बैंक, डाकघर, उच्च श्रेणी का अतिथि गृह, अस्पताल तथा शिक्षकों और कर्मचारियों के आवास की सुविधा उपलब्ध है।

संस्कृत विभाग

संस्कृत विभाग देश के प्रतिष्ठित संस्कृत विभागों में से एक है। विश्वविद्यालय की स्थापना के साथ ही 1946 में संस्कृत विभाग की स्थापना हुई जिसमें साहित्यशास्त्र, नाट्यशास्त्र, आधुनिक संस्कृत साहित्य, वेद, व्याकरण तथा दर्शन के क्षेत्र में शोध के नये आयाम उद्घाटित हुए हैं। विभाग से त्रैमासिक संस्कृत शोध पत्रिका 'सागरिका' तथा सौंदर्यशास्त्र एवं रंगमंच की त्रैमासिक शोध पत्रिका 'नाट्यम्' (यूजीसी केयर लिस्टेड) निरन्तर प्रकाशित हो रही है। विभाग के संस्कृत परिषद् द्वारा लगभग 75 पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। 160 शोधार्थी पी-एच.डी. उपाधि तथा 6 मनीषी डी.लिट् उपाधि प्राप्त कर चुके हैं। विभाग के पूर्व आचार्य प्रो. रामजी उपाध्याय, प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी आदि भारत सरकार के राष्ट्रपति पदक से सम्मानित किये गये हैं। विभाग के द्वारा अब तक एक अन्ताराष्ट्रिय सङ्गोष्ठी के साथ ही 50 से अधिक राष्ट्रीय सङ्गोष्ठियों और अनेक कार्यशालाओं का आयोजन किया जा चुका है। विभाग के शिक्षकों द्वारा 200 से अधिक पुस्तकों का प्रणयन किया गया है। विभागीय पुस्तकालय में 5000 से अधिक मूल्यवान् पुस्तकों का संग्रह है। विभाग के अंतर्गत संचालित पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्र में 6000 से अधिक पाण्डुलिपियाँ विद्यमान हैं।

सङ्गोष्ठी का उद्देश्य

वैदिक वाङ्मय भारतीय संस्कृति, परम्परा और ज्ञान-विज्ञान की आधारशिला है, जिसे भारतीय ज्ञान परम्परा का आदि स्रोत माना जाता है। वैदिक ऋषियों के ब्रह्माण्डीय ज्ञान से समन्वित वैदिक वाङ्मय में विज्ञान के आविर्भाव के सूत्र उपलब्ध होते हैं। मन्त्रद्रष्टा ऋषि अपनी दिव्य दृष्टि से अनुसंधान पूर्वक अनुपस्थित विषय को भी उपस्थित कर देने की क्षमता रखते हैं। ऋषियों का समस्त ज्ञान व्यावहारिक दृष्टि से उतना ही उपयोगी है जितना आज के वैज्ञानिकों का प्रयोगशालीय अनुसन्धान। वैदिक ऋषि स्थूल से सूक्ष्म की ओर बढ़ता है जबकि आज के वैज्ञानिकों का चिंतन स्थूल मात्र तक ही सीमित रह जाता है। स्थूल विषयों के सहज प्रकाश्य होने के कारण वैज्ञानिकों का अनुसन्धान सद्यः प्रकाश में आ जाता है, जबकि वैदिक ऋषियों की साधना से प्राप्त गूढ़ ज्ञान अपनी सूक्ष्म पर्यन्त परिणति के पश्चात् ही अनुभव में आ पाता है। ऋषियों के द्वारा अनुपस्थित को भी उपस्थित कर देने का यह विज्ञान सामान्य जन के बुद्धि के द्वारा सहजगम्य नहीं होता यही कारण है कि उसमें इस ज्ञान के आधार या स्रोत की जिज्ञासा उत्पन्न होती है। परन्तु वैदिक ज्ञान धारण करने के लिए अपेक्षित तप, स्वाध्याय एवं धैर्य के अभाव में वह सहजप्राप्य आधुनिक विज्ञान की ओर आकर्षित हो जाता है। तत्क्षण परिणाम के आकांक्षी वैज्ञानिक सतत साधनाजन्य विराट् वैदिक विज्ञान को स्वीकार नहीं कर पाते हैं, जबकि अनेक प्राच्य एवं पाश्चात्य विद्वानों के द्वारा न केवल वैदिक विज्ञान की प्रामाणिकता स्वीकार की गयी है अपितु इससे सम्बन्धित विविध अनुसंधान भी उनके द्वारा किये गए हैं। वैदिक वाङ्मय के बृहद् क्षेत्र में वैदिक संहिता के साथ ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद्, वेदांग (शिक्षा, कल्प, व्याकरण,निरुक्त छंद, ज्योतिष) आदि परिगणित होते हैं। वैदिक वाङ्मय में गणित, भूगोल, खगोल, आयुर्वेद, रसायनविज्ञान, जन्तुविज्ञान, वनस्पतिविज्ञान, भौतिकविज्ञान, कृषिविज्ञान, वृष्टिविज्ञान आदि के विषय बहुलता से प्राप्त होते हैं। वेद के विषय में आचार्य मनु कहते हैं - सर्वज्ञानमयो हि सः अर्थात् वेदों में सभी विद्याओं का सूत्र विद्यमान है। वर्तमान में आधुनिक विज्ञान अहमहमिकया रूप में भले ही हमारे समक्ष हो पर इनका सूत्र रूप हमें वेदों में प्राप्त होता है। अथर्ववेद में जल में अग्नि का निवास बतलाया गया है या अग्निं गर्भं दधिरे सुवर्णास्ता न आपः शं स्योना भवन्तु (अथर्व 1/33/1) ऋग्वेद में आया है कि सविता यन्त्रैः पृथिवीम् अरम्णात् (ऋ.10/149/1) अर्थात् सूर्य अपनी आकर्षण शक्ति से पृथ्वी को रोके हुए है। यजुर्वेद में कहा गया है कि सविता ही जल के आधार हैं और अग्नि के उत्पन्नकर्ता हैं अपां पृष्ठमसि योनिरग्नेः (यजु. 11/29)। अथर्ववेद में सीसे से बनी गोलियों से शत्रुओं को मारने का वर्णन किया गया है - तं त्वा सीसेन विध्यामो यथा नोसो अवीरहा (अथर्व.1/16/4)। इस प्रकार वैदिक वाङ्मय में विविध स्थानों पर वैज्ञानिक तथ्य विवेचन से उसमें अन्तर्निहित ऋषियों की वैज्ञानिक दृष्टि परिलक्षित होती है। वर्तमान समय में इन महनीय विषयों को जानना-समझना अति आवश्यक हो गया है। मन्त्रों का ज्ञान केवल शब्दार्थ आधारित नहीं बल्कि वे चिन्तन-मनन-निदिध्यासन परक हैं। मन्त्रों के विषय अत्यन्त गूढ़ और रहस्यात्मक हैं जिन्हें परिश्रम पूर्वक अध्ययन तथा अभ्यास से ही समझा जा सकता है।

अस्तु, इसी महत् उद्देश्य को ध्यान में रखकर वैदिक वाङ्मय में विज्ञान के विविध आयामों पर गहन विचार-विमर्श के लिए त्रिदिवसीय अखिल भारतीय वैदिक संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है।

सङ्गोष्ठी के प्रस्तावित उपविषय

- वैदिक वाङ्मय में भौतिकविज्ञान
- वैदिक वाङ्मय में अग्निविज्ञान
- वैदिक वाङ्मय में रसायनविज्ञान
- वैदिक वाङ्मय में जन्तुविज्ञान
- वैदिक वाङ्मय में वनस्पतिविज्ञान
- वैदिक वाङ्मय में कृषिविज्ञान
- वैदिक वाङ्मय में शिल्पविज्ञान
- वैदिक वाङ्मय में भूगर्भविज्ञान
- वैदिक वाङ्मय में वृष्टिविज्ञान
- वैदिक वाङ्मय में मौसमविज्ञान
- वैदिक वाङ्मय में यज्ञविज्ञान
- वैदिक वाङ्मय में चिकित्साविज्ञान
- वैदिक वाङ्मय में स्वरविज्ञान
- वैदिक वाङ्मय में मनोविज्ञान
- वैदिक वाङ्मय में अध्यात्मविज्ञान
- वैदिक वाङ्मय में समाजविज्ञान
- वैदिक वाङ्मय में गणितशास्त्र
- वैदिक वाङ्मय में शिक्षाशास्त्र
- वैदिक वाङ्मय में पर्यावरण
- वैदिक वाङ्मय में योग

शोध आलेख आमन्त्रण

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन (म.प्र.) के निर्देशानुसार अखिल भारतीय वैदिक सङ्गोष्ठी के विभिन्न उपविषयों से सम्बन्धित शिक्षकों, शोधार्थियों, को अपना शोध-पत्र संस्कृत/हिन्दी भाषा में कृतिदेव 010-फॉन्ट साईज़ 14, यूनिकोड कोकिला-फॉन्ट साईज़ 14 (Krutidev 010, Font Size10, Unicode Kokila, Font Size 14) में दिनांक 31 अक्टूबर 2024 तक drkumarsanjaybhu@gmail.com ई-मेल पर भेजना अनिवार्य है।

पंजीयन शुल्क

- सङ्गोष्ठी में प्रतिभाग करने के लिए पंजीयन संस्कृत विभाग अथवा सङ्गोष्ठी आयोजन स्थल पर हो सकेगा। पंजीयन शुल्क के रूप में शोधार्थी - 800 रू., शिक्षक-1200 रू. मात्र नगद भुगतान करके अपना पंजीयन करा सकते हैं। आवास व्यवस्था केवल आमंत्रित विद्वानों के लिए ही उपलब्ध रहेगी। स्थानीय प्रतिभागियों के लिए केवल दिन में भोजन की व्यवस्था की जायेगी।

आमंत्रित अतिथि वक्ता

प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी, भोपाल, म.प्र.
प्रो. श्रीनिवास वरखेड़ी - दिल्ली
प्रो. जी. एस. आर. कृष्णमूर्ति - तिरुपति, आन्ध्रप्रदेश
प्रो. बिहारी लाल शर्मा - वाराणसी, उ.प्र.
प्रो. विजय कुमार सी. जी. - उज्जैन, म.प्र.
प्रो. सच्चिदानन्द मिश्र - दिल्ली
प्रो. राजेश्वर मिश्र - कुरुक्षेत्र, हरियाणा
प्रो. गणेशी लाल सुथार - जोधपुर, राजस्थान
प्रो. अमलधारी सिंह - वाराणसी, उ.प्र.
प्रो. रहसबिहारी द्विवेदी - जबलपुर, म.प्र.
प्रो. जे. पी. एन. द्विवेदी - द्वारका, गुजरात
प्रो. सत्यप्रकाश दुबे - कैथल, हरियाणा
प्रो. उमाकान्त यादव - प्रयागराज, उ.प्र.
प्रो. रामहित त्रिपाठी - प्रयागराज, उ.प्र.
प्रो. रमाकांत पाण्डेय - भोपाल, म.प्र.
प्रो. गोपाल लाल मीणा - दिल्ली
प्रो. हिमांशु शेखर आचार्य - अलीगढ़, उ.प्र.
प्रो. बालकृष्ण शर्मा - ग्वालियर, म.प्र.
प्रो. एस. एस. गौतम - पिछौर, म.प्र.
प्रो. विष्णुकान्त पाण्डेय - जयपुर, राजस्थान
प्रो. प्रसूनदत्त सिंह - मोतिहारी, बिहार
प्रो. विनोद कुमार गुप्ता - प्रयागराज, उ.प्र.
प्रो. हनुमान मिश्र - दिल्ली
डॉ. अभय नाथ सिंह - वैशाली, बिहार
डॉ. निरंजन मिश्र - तिरुपति, आन्ध्रप्रदेश
डॉ. वी. सुब्रह्मण्यम - पुणे, महाराष्ट्र
डॉ. संत प्रकाश तिवारी - प्रयागराज, उ.प्र.
डॉ. सत्येन्द्र कुमार यादव - वाराणसी, उ.प्र.
डॉ. गौरव सिंह - लखनऊ, उ.प्र.
डॉ. मंजुनाथ भट्ट - कर्नाटक
डॉ. राघवेन्द्र शर्मा - रायपुर, छत्तीसगढ़
डॉ. देवेन्द्र सिंह - साँची, म.प्र.
डॉ. सन्दीप कुमार यादव - प्रयागराज, उ.प्र.
डॉ. वेदव्रत - हरिद्वार, उत्तराखण्ड
डॉ. सत्य केतु - लखनऊ, उ.प्र.
डॉ. शैलेन्दु शेखर वशिष्ठ - जालौन, उ.प्र.
डॉ. उमेश भट्ट, तिरूपति, आन्ध्रप्रदेश